Food . Farmers . Freedom

आशा-किसान स्वराज सम्मेलन 2026

किसान स्वराज सम्मेलन 2026 में वक्ता / सूत्रधार

(पश्चिमी और उत्तरी भारत)

1. **अफसर जाफ़री** : रिसर्चर और पॉलिसी एनालिस्ट। अभी GRAIN के साथ।
2. **आकाश बडवे** : छत्तीसगढ़ में NIRMAAN के हेड हैं और दंतेवाड़ा जिले को देश का सबसे बड़ा प्राक्रुतिक लैंडस्केप सर्टिफाइड कराने में अहम भूमिका निभाई है, जो सिक्किम से भी बड़ा है।
3. **आकाश नौघरे** : अभी फ्रीलांसर हैं, IDS, ससेक्स से डेवलपमेंट स्टडीज़ में मास्टर डिग्री के बाद बीज की आज़ादी, पशुपालक समुदायों, कारीगरों की रोज़ी-रोटी से जुड़े मुद्दों पर काम कर रहे हैं।
4. **अनंतू**: एक पूर्व टेलीकॉम इंजीनियर जो प्राक्रुतिक खेती, किसानों के अधिकारों और फ़ूड सेफ़्टी के लिए एक्टिविस्ट बन गए। उन्होंने OFM चेन्नई की स्थापना की, जो ऑर्गेनिक फ़ूड के लिए एक नॉट-फ़ॉर-प्रॉफ़िट रिटेल कोऑपरेटिव है और TULA इंडिया, जो पूरी तरह से हाथ से बने ऑर्गेनिक कॉटन गारमेंट/फ़ैब्रिक लाइन है।
5. **अंजलि गामित** : AKRSP-I के साथ, गुजरात के डांग जिले में लैंडस्केप-लेवल एग्रो-इकोलॉजिकल ट्रांसफॉर्मेशन के काम की डिस्ट्रिक्ट टीम को हेड कर रही हैं।
6. **आशीष पांडा** : संभव ट्रस्ट के हेड, जो राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के भील-बहुल ट्राइजंक्शन में पंचायत गवर्नेंस, पानी, बीज सॉवरेनिटी और प्राक्रुतिक खेती से जुड़े मुद्दों पर काम कर रहे हैं।
7. **आत्मन शाह:** सेंट जेवियर्स कॉलेज, अहमदाबाद में इकोनॉमिक्स के असिस्टेंट प्रोफेसर के तौर पर काम करते हैं। आजकल के डेवलपमेंट पर कमेंटेटर हैं और नेशनल अखबारों में पब्लिश करते हैं।
8. **बाबूभाई पटेल:** भारतीय किसान संघ, गुजरात के नेशनल सेक्रेटरी हैं। वे किसानों के मुद्दों के लिए संघर्ष करने के लिए जाने जाते हैं और किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए पेप्सिको इंडिया होल्डिंग्स के खिलाफ लड़ाई में सक्रिय रहे हैं।
9. **भरत जम्बूचा:** गुजरात के भावनगर जिले में किसानों के बीच प्राक्रुतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं। साथ ही, लोकल लेवल पर एटॉमिक पावर प्लांट के खिलाफ विरोध में भी शामिल हैं। लोकल प्राक्रुतिक किसानों को मार्केट सपोर्ट दे रहे हैं।
10. **बिपिनभाई पटेल:** नॉर्थ गुजरात पोटैटो कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग फार्मर्स एसोसिएशन के फाउंडर मेंबर। पेप्सिको इंडिया होल्डिंग्स ने उन पर केस किया है, इस बहाने कि उन्होंने (और दूसरे किसानों ने) कंपनी के IPR का उल्लंघन किया है। उन्होंने ASHA और दूसरे एक्टिविस्ट की मदद से इस अन्याय के खिलाफ कामयाबी से लड़ाई लड़ी। अब वह कॉन्ट्रैक्ट पर आलू उगाने वाले किसानों को इकट्ठा कर रहे हैं।
11. **डॉ. सी.के. टिम्बाडिया** : गुजरात नेचुरल फार्मिंग साइंस यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर। वे एग्रोइकोलॉजी के प्रति कमिटमेंट रखने वाले साइंटिस्ट के तौर पर किसानों के बीच पॉपुलर हैं।

12. **डॉ. देबल देब** : इकोलॉजिस्ट और प्राक्रुतिक किसान। धान की 1400 से ज़्यादा लैंडरेस/किसानों की किस्मों के जाने-माने कंजर्वेटर, और कुछ दुर्लभ और विलुप्त पौधों की प्रजातियों के कंजर्वेटर। एशिया के सबसे बड़े कम्युनिटी राइस सीड बैंक, वृही के फाउंडर, जो मुफ़्त में बीज बांटते हैं।

13. **डॉ. एम. दीन** : उन्होंने इंडियन काउंसिल ऑफ़ एग्रीकल्चरल रिसर्च के सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ़ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग (CIAE) भोपाल, मध्य प्रदेश में एनिमल इंजीनियर के इस्तेमाल पर ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट के प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर के तौर पर काम किया। रिसर्च पेपर "जानवरों से चलने वाले अच्छे औजारों के ज़रिए खेती के लिए बैलों का इस्तेमाल" पब्लिश किया।

14. **देवेश पटेल:** एक प्राक्रुतिक किसान हैं। सतवा ऑर्गेनिक के हेड हैं और OFAI (ऑर्गेनिक फार्मिंग एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया) का एक्टिव हिस्सा हैं। वह दूसरे किसानों को फ़ायदेमंद बाज़ार ढूंढने में मदद करने के लिए एक FPO भी चलाते हैं।

15. **देविंदर शर्मा** : देविंदर शर्मा एक जाने-माने और सम्मानित खेती और खाद्य पॉलिसी एनालिस्ट हैं। वे एग्रीकल्चरल रिफ़ॉर्म्स पर माननीय सुप्रीम कोर्ट की हाई-पावर्ड कमिटी के सदस्य भी हैं।

16. **धीरेंद्र - स्मिता** : जाने-माने प्राक्रुतिक किसान, जिन्होंने 1986 में 2 एकड़ ज़मीन पर प्राक्रुतिक खेती शुरू की, जो सादा और इंसानी ज़िंदगी जीने की बात करते हैं। उनका मानना है कि व्यक्ति, परिवार और समाज की बेहतरी के लिए ऑर्गेनिक/ प्राक्रुतिक खेती के साथ-साथ गांव के उद्योग और लाइफस्टाइल में बड़े बदलाव अपनाए जाने चाहिए।

17. **गोपालभाई सुतारिया:** बंसी गिर गौशाला के हेड हैं, और गौ कृपामृत के अपने इनोवेशन के लिए मशहूर हैं, जो पूरे भारत में नेचुरल खेती के लिए एक बहुत पॉपुलर इनपुट बन गया है। देसी गायों के लिए पारंपरिक चारे के सिस्टम पर भी काम करते हैं। पूरे भारत में उनके बहुत बड़े और बढ़ते फॉलोअर्स ग्रुप हैं।

18. **हरीश चौहान** : हिमाचल प्रदेश के जाने-माने किसान नेता। हिल स्टेट्स हॉर्टिकल्चर फोरम के कन्वीनर; संयुक्त किसान मंच के कन्वीनर; हिमाचल प्रदेश के फ्रूट्स, वेजिटेबल्स एंड फ्लावर ग्रोअर्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट। राज्य में सेब उगाने वालों के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने वाले।

19. **हरीश पंवार** : MP के झाबुआ जिले में संपर्क से जुड़े, किसानों के अधिकारों और चिरंजीव खेती से होने वाली आजीविका को बढ़ावा देने पर काम करते हैं। लेखक और वीडियो पत्रकार।

20. **डॉ. हेमंतकुमार शाह** : अहमदाबाद में इकोनॉमिक्स के प्रोफेसर। एचके आर्ट्स कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल। डेमोक्रेसी, इकोनॉमिक्स और डेवलपमेंट के मुद्दों पर लेखक और वक्ता।

21. **हीरल दवे** : कोहेशन फाउंडेशन के साथ प्रोग्राम डायरेक्टर के तौर पर जुड़ी हुई, वह जेंडर, इनक्लूसिवनेस और इंस्टीट्यूशन-बिल्डिंग को इंटीग्रेट करने में ऑर्गनाइज़ेशन की टीमों को डायरेक्शन देती हैं। उन्हें महिला किसानों के साथ काम करने और क्लाइमेट रेजिलिएंट चिरंजीव खेती को बढ़ावा देने का 25 साल का अनुभव है।

22. **हिरेन पंचाल:** गुजरात के वलसाड के धरमपुर के आदिवासी इलाके में मिट्टीधन नाम की एक पहल के हेड हैं। वे कई एर्गोनॉमिक, कम लागत वाले खेती के इक्विपमेंट और ग्रामीण टेक्नोलॉजी सॉल्यूशन के इनोवेटर हैं।

23. **जगतार धालीवाल** : पंजाब के एक प्राक्रुतिक किसान और अनुभवी ट्रेनर, जो पंजाब की खेती में बदलाव के लिए खेती विरासत मिशन के आंदोलन से जुड़े हैं।

24. **जननी बारथ** : अभी एक फ्रीलांस डेवलपमेंट वर्कर हैं। जननी पहले भी समाजसेवी और पर्यावरण से जुड़े संगठनों से जुड़ी रही हैं, और कमज़ोर बच्चों और दिव्यांग लोगों के साथ काम किया है।

25. **जशोदा सोमाभाई वंजारा** : पणम महिला संगठन से जुड़ी महिला किसान नेता। प्राक्रुतिक किसान।

26. **जया अय्यर** : जया अय्यर पहले प्रवाह की CEO थीं, अभी गांधीनगर में रहती हैं और थिएटर, आर्ट, अंदरूनी काम और क्यूरेटेड अनुभवों के ज़रिए खुशी, खूबसूरती और आसानी लाने के सफ़र पर हैं। वह दबे-कुचले लोगों के थिएटर पर फ़ोकस करती हैं। वह पॉलिटिकल वर्कर्स को जागरूक करने पर भी काम करती हैं।

27. **डॉ. कंदर्प मेवाड़ा** : एग्रोनॉमिस्ट और एग्रोइकोलॉजी के प्रति गहरी प्रतिबद्धता। एग्रीकल्चर कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल और गुजरात नेचुरल फार्मिंग साइंस यूनिवर्सिटी के डायरेक्टर-रिसर्च।

28. **कपिल शाह** : 1980 के दशक से गुजरात में प्राक्रुतिक खेती को बढ़ावा देने वाले, वे प्राक्रुतिक खेती के लिए एक मिशन, जतन को लीड करते हैं। वे ASHA-किसान स्वराज के को-कन्वीनर हैं और पहले ऑर्गेनिक फार्मिंग एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया के सेक्रेटरी थे। उन्होंने कई सरकारी कमेटियों में काम किया और एग्रोइकोलॉजी की ओर गुजरात की पॉलिसी में बदलाव में अहम भूमिका निभाई।

29. **कविता कुरुगंटी** : किसान अधिकारों की कार्यकर्ता और टिकाऊ खेती से होने वाली आजीविका को बढ़ावा देने वाली।

30. **किरण चावड़ा** : डायरेक्टर, लोकनिकेतन। नेचर-लवर, माउंटेनियर, बर्डर। सोशल और एनवायरनमेंटल जस्टिस के पक्के समर्थक।

31. **कृष्ण प्रसाद** : नेटिव सीड्स मैन के नाम से मशहूर, कृष्ण प्रसाद सहज समृद्धि के हेड हैं और उन्होंने देसी सीड्स प्रोड्यूसर कंपनी शुरू की है, जो ऑर्गेनिक देसी बीज सप्लाई में स्पेशलाइज़्ड एक FPC है। उन्होंने पूरे भारत में कई बीज बचाने वाले किसानों को भारत बीज स्वराज मंच में एक साथ लाने में अहम भूमिका निभाई।

32. **लक्ष्मण सिंह मुनिया** : लोक जागृति मंच, झाबुआ जिला, मध्य प्रदेश के एक अनुभवी किसान और जमीनी कार्यकर्ता।

33. **मनोज सोलंकी** : अक्षय कृषि परिवार के नेशनल प्रेसिडेंट। रामकृष्ण ट्रस्ट के फाउंडिंग ट्रस्टी, जो 25 सालों से कच्छ में ऑर्गेनिक / प्राक्रुतिक खेती को बढ़ावा दे रहे हैं।

34. **मीनल परमार**: वर्किंग ग्रुप ऑन विमेन्स लैंड ओनरशिप (WGWLO) के सेक्रेटेरिएट को मैनेज करती हैं। यह भारत में ऑर्गनाइज़ेशन और लोगों का एक यूनिक सिविल सोसाइटी प्लेटफ़ॉर्म है जो गांव की महिलाओं के ज़मीन के अधिकारों और रोज़ी-रोटी के लिए फेमिनिस्ट अप्रोच अपनाता है।

35. **नसीम शेख** : स्वयं शिक्षण प्रयोग की CEO, पुणे में मौजूद एक बहुत ही अनोखी, आगे बढ़ने वाली महिला संस्था है, जो ज़मीनी स्तर की महिला लीडर्स को मज़बूत बनाने और एग्रोइकोलॉजी के ज़रिए बड़े पैमाने पर कम्युनिटी लेवल पर मज़बूती को बढ़ावा देने, आर्थिक बराबरी और पर्यावरण की रक्षा के लिए जानी जाती है।

36. **नेकराम शर्मा** : मशहूर पद्मश्री अवॉर्ड पाने वाले, वे हिमाचल में पारंपरिक मिक्स्ड क्रॉपिंग सिस्टम और बाजरा की खेती को फिर से शुरू करने के अपने काम के लिए जाने जाते हैं। जाने-माने प्राक्रुतिक किसान।

37. **नीलेश देसाई** : मध्य प्रदेश में एक ज़मीनी स्तर का संगठन, संपर्क, शुरू किया और उसे चलाते हैं। यह संगठन आत्मनिर्भर आदिवासी समुदायों को पूरे विकास में मदद करने के लिए काम करता है। कंस्ट्रक्टिव काम के लिए जमनालाल बजाज अवॉर्ड, 2022 के प्राप्तकर्ता।

38. **निवेदिता रमनन** : चिरंजीव खेती, सुरक्षित भोजन और होलिस्टिक हेल्थ मूवमेंट में एक डेडिकेटेड वॉलंटियर। चिरंजीव जीवन के लिए कमिटेड।

39. **पीएल पटेल** : एग्रोइकोलॉजी में एक काबिल और असरदार ट्रेनर, वाग्धारा, राजस्थान से जुड़े।

40. **पल्लवी सोबती राजपाल** : पल्लवी वर्किंग ग्रुप फॉर विमेन एंड लैंड ओनरशिप (WGWLO) की बोर्ड मेंबर हैं। यह ग्रुप 2002 में एक अलग-अलग तरह के नेटवर्क के तौर पर शुरू हुआ था और अब यह गुजरात के 17 जिलों में काम कर रहा है। नेटवर्क की कोशिशों से अब 18000 गांव की महिलाएं गर्व से ज़मीन की मालिक हैं। वह उत्थान की जॉइंट CEO भी हैं, जो WGWLO के फाउंडिंग मेंबर ऑर्गनाइज़ेशन में से एक है। पल्लवी को जेंडर जस्टिस, अधिकारों और चिरंजीव विकास के मुद्दों का गहरा अनुभव है।

41. **प्रताप मरोड़े** : प्रताप मरोड़े विदर्भ के एक प्राक्रुतिक किसान हैं, जो सयाल फार्म में अलग-अलग तरह के एग्रोइकोलॉजिकल सिस्टम की खेती करते हैं, जहाँ वे मिट्टी की सेहत को ठीक करने और देसी कपास और देसी बीजों को फिर से उगाने का काम करते हैं। वे युवा किसानों के ग्रुप फ्रेंड्स ऑफ अर्थवर्म FPC के डायरेक्टर हैं।

42. **प्रवीण मुच्छड़िया** : सात्विक से जुड़े प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर, जो इकोलॉजिकल एग्रीकल्चर को बढ़ावा देते हैं।

43. **डॉ. राजेंद्रभाई खिमानी** : हॉर्टिकल्चर में PhD. पहले दो SAU में साइंटिस्ट रहे. गुजरात विद्या पीठ के पूर्व वाइस चांसलर. अभी लोक भारती यूनिवर्सिटी फॉर रूरल इनोवेशन के वाइस चांसलर हैं.

44. **डॉ. राजेश्वर चंदेल** : डॉ. राजेश्वर चंदेल: कुलपति, वाईएस परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश। भारत में प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देने में, विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में, वे अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। प्राकृतिक कृषि, कृषि पारिस्थितिकी और टिकाऊ खाद्य प्रणालियों में उनकी गहरी रुचि है। इससे पहले वे हिमाचल प्रदेश सरकार के प्राकृतिक कृषि मिशन के कार्यकारी निदेशक के पद पर कार्यरत थे।

45. **रमेश रूपारेलिया:** गौपालक रमेशभाई रूपारेलिया गोंडल में गिर गौ जतन संस्थान के फाउंडर हैं, ज़हर मुक्त भारत यात्रा के एक मुख्य लीडर हैं, और एक मोटिवेशनल स्पीकर हैं जो गाय पर आधारित नेचुरल खेती और चिरंजीव जीवनशैली के लिए देश भर में जागरूकता अभियान को बढ़ावा देने के लिए समर्पित हैं। उन्होंने गाय के दूध पर आधारित और गोमय प्रोडक्ट बनाए हैं जिन्हें 65 से ज़्यादा देशों में एक्सपोर्ट किया जाता है, जिससे देसी गाय पर आधारित सेहत और आत्मनिर्भरता के बारे में दुनिया भर में जागरूकता फैलती है।

46. **रेस्मी दीपक** : केरल एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट की एक अधिकारी, रेस्मी ने केरल के अलाथुर में NIRA सेना लेबर कलेक्टिव बनाने में मदद की, यह उस इलाके के MLA का आइडिया था।

47. **रोहित जैन** : उदयपुर में बैनियन रूट्स के साथ फार्म-टू-फोर्क सप्लाई चेन बनाने वाले एक जोशीले सोशल एंटरप्रेन्योर। प्राक्रुतिक फार्मिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया (OFAI) के मैनेजमेंट कमेटी मेंबर के तौर पर, चिरंजीव खेती को बढ़ावा दे रहे हैं और कंज्यूमर्स को लोकल किसानों से जोड़ रहे हैं।

48. **रोहित पारख** : एक युवा आध्यात्मिक वॉलंटियर, जो पर्यावरण के अनुकूल आजीविका और जीवनशैली को बढ़ावा देने वाले अलग-अलग नेटवर्क से जुड़े हैं। सर्वोदय और स्वराज की ज़रूरत में विश्वास रखते हैं।

49. **रूपसी गर्ग** : खेती विरासत मिशन से जुड़ी हैं और नव त्रिनजन की फाउंडर हैं। यह पंजाब की एक अनोखी पहल है जो देसी कॉटन से हाथ से बने कामों को फिर से शुरू करती है ताकि कारीगरी का हुनर और ज्ञान ज़िंदा रहे और रोज़ी-रोटी बेहतर हो।

50. **साई निकम** : डेवलपमेंट प्रैक्टिशनर। कंसोर्टियम फॉर एग्रोइकोलॉजी ट्रांसफॉर्मेशन (CAT) के कोऑर्डिनेटर।

51. **सजनाबेन भोया** : उजास महिला खेदूत संगठन, नवसारी, गुजरात (कोहेसन फाउंडेशन द्वारा प्रमोटेड एक CBO) से जुड़ी महिला किसान नेता।

52. **संजय पाटिल** : *BAIF* के एग्रो-बायोडायवर्सिटी स्पेशलिस्ट और सीनियर थीमैटिक प्रोग्राम एग्जीक्यूटिव। हसमुख शाह मेमोरियल अवॉर्ड के प्राप्तकर्ता। एग्रोडायवर्सिटी के एंड-टू-एंड साइंटिफिक कंजर्वेशन और रिवाइवल के एक्सपर्ट।

53. **संतोष पचार** : एक महिला किसान, जिन्हें उनके नए गाजर बीज ब्रीडिंग के काम के लिए पहचान और अवॉर्ड मिला है। राजस्थान की जानी-मानी प्राक्रुतिक किसान।

54. **सेजल दंड** : गुजरात में आदिवासी समुदायों के साथ काम करने वाले एक फेमिनिस्ट संगठन ANANDI की फाउंडर। फेमिनिस्ट एक्टिविस्ट, ट्रेनर, डेवलपमेंट प्रैक्टिशनर, भारत में राइट टू फूड कैंपेन और महिला किसान अधिकार मंच (MAKAAM) सहित कई नेटवर्क में एक्टिव हैं।

55. **प्रोफेसर शंभू प्रसाद** : IRMA और त्रिभुवनदास सहकारी यूनिवर्सिटी में स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट और सोशल साइंसेज के प्रोफेसर, जिन्हें खेती, प्रोड्यूसर कलेक्टिव, ग्रामीण आजीविका और इनक्लूसिव एंटरप्रेन्योरशिप में सस्टेनेबिलिटी ट्रांजिशन में एक्सपर्टाइज़ है। एकेडमिक इंस्टीट्यूशन और नॉन-प्रॉफिट के बोर्ड ऑफ स्टडीज के मेंबर और सोशल एंटरप्राइजेज के मेंटर हैं।

56. **श्रुति शाह** : बॉटनिस्ट, पेड़-प्रेमी, पेड़ उगाने वाली। जड़ी-बूटियों और खरपतवारों की पहचान में एक्सपर्ट।

57. **सौमिक बनर्जी** : बायोटेक्नोलॉजी के साथ-साथ फॉरेस्ट साइंस में ट्रेंड, सौमिक मध्य प्रदेश में एक प्राक्रुतिक किसान और लैंडरेस कंजर्वेटर हैं। पूरे भारत में कई किसानों के बीज संरक्षण के काम में मदद करते हैं। भारत में पहले और आज की एग्रोइकोलॉजी की अपनी गहरी जानकारी के लिए जाने जाते हैं।

58. **श्रीजेश गुप्ता** : AKRSP-I में इनक्यूबेट किए गए C-GEM के फाउंडर। समावेश के को-फाउंडर - एक कम्युनिटी जिसका मिशन भारत में पब्लिक डिस्कोर्स को बदलना है।

59. **सुभाष शर्मा** : महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के जाने-माने नेचुरल किसान, जिन्हें मशहूर पद्मश्री सम्मान मिला है। उनका खेत उन लोगों के लिए एक तीर्थस्थल है जो नेचुरल खेती को समझना चाहते हैं और उनकी सोच कई खेती करने वालों के लिए प्रेरणा है।

60. **सुनीताबेन अमरसिंह बारिया** : वह पानाम महिला संगठन से जुड़ी एक महिला किसान नेता हैं। वह जैविक खेती करती हैं और दूसरों को भी जैविक/प्राकृतिक पद्धतियों का प्रशिक्षण देती हैं।

61. **सुशांत चौधरी** : प्रोग्राम मैनेजर, WASSAN ओडिशा। बीजों के टेक्निकल एक्सपर्ट, राज्य सरकार के सपोर्ट से ओडिशा में पारंपरिक बीज विविधता को फिर से लाने में लगे हुए हैं।

62. **सुशीलाबेन हेमंतभाई महाला** : उजास महिला खेदूत संगठन की एक महिला किसान नेता, (CBO जिसे दक्षिण गुजरात में कोहेशन फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा बढ़ावा दिया गया है)।

63. **उदय वोरा** : रिटायर्ड चीफ कंजर्वेटर ऑफ फॉरेस्ट्स, गुजरात। जाने-माने पक्षी और वन्यजीव प्रेमी।

64. **उमेंद्र दत्त** : खेती विरासत मिशन की स्थापना की और उसे लीड किया, जो पंजाब की खेती को एग्रो-इकोलॉजी की ओर बदलने का एक मूवमेंट है। जाने-माने एनवायरनमेंटलिस्ट और "नानक खेती" के प्रमोटर, जिन्होंने पंजाब में सैकड़ों किसानों के साथ ऑर्गेनिक और प्राक्रुतिक खेती को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया।

65. **विजय शाह** : प्राक्रुतिक किसान और विपश्यना साधक, गुजरात।

66. **विनय और चारुल** : सपने देखने वाले, रिसर्चर और सिंगर-सॉन्गराइटर जो उम्मीद के गाने, ज़िंदगी के गाने बनाते और गाते हैं। उनके गाने लोगों को अन्याय से लड़ने और एक बेहतर दुनिया के लिए काम करने की प्रेरणा देते हैं।

67. **डॉ. विपिन चौधरी** : राष्ट्रीय समन्वयक एवं प्रधान वैज्ञानिक, कशेरुकी कीटों पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना, राष्ट्रीय समन्वय इकाई, काजरी जोधपुर।